1. सदैव कृष्णकृपामूर्ति ए.सी. भक्तिवेदांत स्वामी प्रभुपाद, (अन्तर्राष्ट्रीय कृष्णभावनामृत संघ के संस्थापक आचार्य) को सर्वकालिक पूर्वप्रतिष्ठित शिक्षा गुरु के रूप में स्वीकार करें।

2. सदैव इस्कॉन के जीबीसी को इस्कॉन के अंतिम प्रबंधन प्राधिकरण एवं श्रील प्रभुपाद के प्रतिनिधि के रूप में स्वीकार करें और इसलिए इसके निर्देशों तथा मार्गदर्शनों का पालन करें।

3. इस्कॉन और श्रील प्रभुपाद के अनुकरणीय प्रतिनिधि बनने के लिए अपना जीवन व्यतीत करें।

4. इस आंदोलन को आगे बढ़ाने के लिए अन्य सभी इस्कॉन भक्तों के साथ मिलकर सहयोग करें।

5. जब आप में से कुछ शिष्य गुरु और संन्यासी बनने के लिए पर्याप्त रूप से प्रगति कर लेते हैं तो उन सेवाओं को लेने के लिए जीबीसी के तहत कार्य करने के लिए अधिकृत प्रक्रियाओं का पालन करें।

6. इस्कॉन को कभी न छोड़ें। सबसे पहले और सबसे महत्वपूर्ण, अपने आप को इस्कॉन का सदस्य समझें। इस्कॉन से कभी न झगड़ें। अपने मतभेदों को आंतरिक रूप से वैष्णव विधि से हल करें।

7. कभी भी अपने आप को ऐसे व्यक्तियों या समूहों के साथ न जोड़ें जो जीबीसी द्वारा अधिकृत नहीं हैं।

8. श्रील प्रभुपाद की पुस्तकों का नियमित रूप से गंभीरता से अध्ययन करें। प्रतिदिन कम से कम सोलह माला जप अवश्य करें। एकादशियों और विशेष तिथियों में कम से कम पच्चीस माला जप करें। और मांस न खाने, नशा न करने, जुआ न खेलने तथा अवैध यौन संबंध न बनाने के चार नियामक सिद्धांतों का कठोरता से पालन करें।

9. इस्कॉन को एक गतिशील संघ बनाने के लिए कार्य करें।

10. इस्कॉन के कार्यों के लिए अपना समय और संसाधन दान करना जारी रखें।